B.A I (Hons) Sub
I paper भारतीय दर्शन

बौद्ध दर्शन – नैतिक आदर्श निर्वाण

बौद्ध दर्शन में, निर्वाण, बुद्ध ने नैतिक उपदेश में विश्वास करता है जहाँ निर्वाण की प्राप्ति ही नैतिक जीवन का आदर्श माना जाता है। निर्वाण की कल्पना वैदिक भारतीय दर्शन में की जाती है। जिसमें दुःख निरोध कहा जाता है। जब कारण का ही अन्त हो जायेगा तब कार्य की उत्पत्ति कैसे होगी। इसे ही दुःख-निरोध कही जाती है। इस दुःख-निरोध को बुद्ध ने निर्वाण कहा है। निर्वाण को भाषा में निर्वाण कहा जाता है वे भारतीय दर्शन में मोक्ष, मुक्ति या कैवल्य की तरह निर्वाण दुःख निरोध है। जिस तरह से दर्शन में मोक्ष कहा जाता है उसी तरह से बौद्ध दर्शन में निर्वाण की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

निर्वाण दुःख निरोध है और दुःख तृष्णा से उत्पन्न होता है अतः तृष्णा के निरोध या तृष्णा से मुक्ति ही निर्वाण है। दुःख का अतः यही संभव है जब इसके कारण का अन्त हो जाये। इस तरह तृष्णा या कामना रूपी कारण का अन्त होने से दुःख रूपी कार्य का समूल नाश हो जाता है।

निर्वाण शब्द के शाब्दिक अर्थ को लेकर बौद्ध दर्शन के दो भागों में बंटा हुआ दिखता है। कुछ विद्वानों ने

निर्वाण का शाब्दिक अर्थ बुझना (Blowing out) लिया है। कुछ विद्वानों ने इसका अर्थ शीतलता से लिया है। जिन लोगों ने इसका शाब्दिक अर्थ बुझना अर्थ लिया है उनका मत है निषेधात्मक मत एवं जिन लोगों ने निर्वाण का अर्थ शीतलता लगाया है उनके मत को भावात्मक मत कहा जाता है।

निषेधात्मक पक्ष के लोग निर्वाण का अर्थ दीपक का बुझ जाने से लिया है जिस प्रकार दीपक के बुझ जाने से उसके प्रकाश का अन्त हो जाता है उसी प्रकार निर्वाण की प्राप्ति से सभी दुःखों का अन्त हो जाता है इस मत को मानने वालों में सर्वप्रथम बौद्ध दर्शन के हीनयान सम्प्रदाय के नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

कुछ विद्वान निर्वाण का अर्थ शीतलता से लिया है उनके विचार को भावात्मक विचार कहा जाता है इस मत के मानने वाले प्रो० मैक्स मूलर, चाइल्डर्स, डॉ० राधाकृष्णन इत्यादि हैं। बौद्ध दर्शन में वासना, तृष्णा-मोह आदि इत्यादि की तुलना अग्नि से की जाती है जहाँ वासना रूपी आग को बुझा दी जाती है निर्वाण की अवस्था पूर्ण निराशा की अवस्था है यहाँ शान्ति आनन्द की अवस्था कहा जाता है इस अवस्था को बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय के लोग समर्थक माने जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन में निर्वाण सम्बन्धी भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनों प्रकार के विचार देखने को मिलता है। हीनयान निषेधात्मक पक्ष को स्वीकार करते हैं वहीं महायान भावात्मक पक्ष को स्वीकार करते हैं। हीनयान में निर्वाण को दुःख निरोध, भव निरोध, जन्म मरण निरोध लेकिन भावात्मक पक्ष के मानने वाले लोग निर्वाण को सिर्फ दुःख निरोध - की व्याख्या को स्वीकार नहीं करते बल्कि शाश्वत आनन्द की व्याख्या के रूप में स्वीकार करते हैं। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में "निर्वाण जो आध्यात्मिक संघर्ष की सिद्धि है भावनात्मक आनन्द की व्याख्या है।" इन विद्वानों के पाली ग्रन्थों में भी निर्वाण को आनन्द की व्याख्या माना जाता है। धम्मपद में निर्वाण को आनन्द, परम सुख, पूर्ण शान्ति तथा लोभ घृणा और भ्रम से रहित व्याख्या कहा जाता है (निब्बानं परमं सुखम्)। अंगुत्तर निकाय में निर्वाण को आनन्द एवं पवित्रता के रूप में लिखित किया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है बौद्ध दर्शन नैतिक आदर्शों के रूप में निर्वाण को स्वीकार करता है निर्वाण के प्राप्ति के बाद सभी प्रकार के दुःखों का अन्त हो जाता है।